International Journal of Geography, Geology and Environment

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2023; 5(2): 133-135
Received: 22-05-2023
Accepted: 10-07-2023

डॉ0 भावना वत्सल
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल आर. एस. एम. (पी.जी.) कॉलेज, धामपुर, बिजनौर,, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ0 ओमप्रकाश मौर्य
एसोसिऐट प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र आर. एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज, धामपुर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 भावना वत्सल
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल आर.एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज, धामपुर, बिजनौर,, उत्तर प्रदेश, भारत

जैविक कृषि के पर्यावरणीय महत्व का भौगोलिक अध्ययन (जनपद बिजनौर के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 भावना वत्सल एवं डॉ0 ओमप्रकाश मौर्य

सारांश
कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। वर्तमान में पर्यावरण की सुरक्षा व सम्वर्द्धन के लिए कृषि की प्राचीन पद्धति जैविक तथा प्राकृतिक कृषि को करने पर विशेष बल दिया जा रहा है जिससे उत्पादित फसलें मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहे। पृथ्वी के संरक्षण के लिए पंच महाभूत पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश तत्व हैं। आज भूमि के पोषण का प्रश्न हम सबके सामने है। पृथ्वी तत्व का सन्तुलन निरन्तर बिगड़ रहा है इसका एक प्रमुख कारण रासायनिक खेती और अत्यधिक अनुपात में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशक व रासायनिक उर्वरक हैं।
जैविक कृषि (आर्गेनिक फॉर्मिंग) वह कृषि पद्धति है जो पर्यावरण, जल व वायु की शुद्धता, भूमि का प्राकृतिक स्वरूप को बनाने वाली, जलधारण क्षमता को बढ़ाने वाली, स्वास्थ्य के लिए लाभदायक, धैर्यशील कृत संकल्पित होते हुए कृषक को कम लागत से दीर्घकालीन स्थिर व अच्छी गुणवत्ता युक्त पारम्परिक कृषि है।

कूटशब्द : जैविक कृषि, उन्नत कृषि, पर्यावरण सन्तुलन, जैविक कीटनाशक, रासायनिक खाद, स्वास्थ्य

प्रस्तावना
भारत में जैविक कृषि(आर्गेनिक फॉर्मिंग) की परम्परा तथा महत्व प्रारम्भिक काल से ही रहा है। पूर्ण रूप से जैविक खादों पर आधारित फसल पैदा करना जैविक कृषि कहलाती है जिसमें जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान का चक्र ''इकोलॉजी सिस्टम'' निरन्तर चलता रहता था जिसके कारण जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। साथ ही मानव स्वास्थ के लिए भी इस पद्धति से उत्पादित खाद्यान्न, फल और सब्जी आदि अनुकूल रहते थे जिससे मानव अनेकों असाध्य रोगों से बचा रहता था।
विश्व के लिए यह भले ही नवीन तकनीकी हो, लेकिन भारतवर्ष में यह प्राचीनकाल से ही परम्परागत रूप से जैविक खाद पर आधारित खेती होती आई है। भारत में प्राचीन समय से ही कृषि के साथ–साथ गौ–पालन किया जाता था जिसके प्रमाण हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं। जैसे भगवान श्रीकृष्ण को गोपाल व बलराम को हलधर के नाम से भी जाना जाता है। कविवर घाघ ने अपनी रचना में जैविक कृषि प्रणाली का उल्लेख करते हुए लिखा है –

''गोबर राखी पाती सडै, फिर खेती में दाना पडै।
सन के डंठल खेत छिटावै, तिनते लाभ चौगुना पावै।।
गोबर, मैला, नीम की खली या स खेती दुनी पली।
वही किसानों में है पूरा, जो छौडे हड्डी का चूरा।''

इन्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर मूवमेन्ट (IFOAM) (2013) द्वारा किये गये अध्ययन के अनुसार विश्व में लगभग दो लाख किसान जो जैविक खेती के तरीकों का अभ्यास करते है, उन फार्मो का लगभग 80 प्रतिशत भाग भारत में है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि भारत विश्व में जैविक कृषि का केन्द्र बिन्दु रहा है। इसका उदाहरण भारत का पूर्वोत्तर राज्य सिक्किम है जो पूरे विश्व में उदाहरण बन गया है। वर्ष 2003 में सिक्किम राज्य ने अपने राज्य में जैविक कृषि का निर्णय लिया जिसके बाद सिक्किम राज्य अपने प्रयासों और नीतियों से पहला पूर्ण आर्गेनिक राज्य घोषित हुआ। इस राज्य में शत–प्रतिशत जैविक कृषि की जाती है। सिक्किम राज्य को जैविक कृषि के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त हुआ।
अनाज हमारी मूलभूत आवश्यकतों में से एक है। 1960 के दशक में भारत में हुई हरित क्रान्ति से गेहूं, चावल, खाद्यान्न फसलों के उत्पादन ने अनाज भंडार तो जमा कर दिये लेकिन इससे हमारी

पारम्परिक कृषि सहित जल, वायु, मिट्टी एवं मानव स्वास्थ्य सभी पर विपरीत प्रभाव पड़ना शुरू हो गया। जैविक कृषि खेती एवं पशुपालन का एक पद्धति है जिसमें फसल चक्र, फसल अवशेष, गोबर की खाद, हरी खाद, यान्त्रिक खेती एवं जैविक कीटनाशकों का प्रयोग कर शुद्ध पौष्टिक रसायनयुक्त उत्पाद प्राप्त करना और साथ ही मिट्टी की उत्पादकता तथा उर्वरता को लम्बे समय तक बना कर रखना होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्न है –

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि फसल प्रतिरूपों की विवेचना।
2. कृषि में नवाचार से जनपद में आये परिवर्तनों का अध्ययन एवं प्राप्त उपलब्धियां।
3. पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से जैविक कृषि का महत्व दर्शाना और जैविक कृषि को बढ़ावा देना।
4. मृदा संरक्षण के लिए जैविक कृषि पद्धति को अपनाने हेतु महत्व बताना।
5. विभिन्न बीमारियों की रोकथाम के लिए जैविक कृषि से उत्पादित खाद्यान्नों के उपभोग से लाभ बताना।
6. जैविक कृषि में आ रही चुनौतियों एवं समस्याओं को ज्ञात कर सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन क्षेत्र

भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित जनपद बिजनौर गंगा के ऊपरी मैदान में स्थित है जो रुहेलखण्ड मैदान के अन्तर्गत आता है। जनपद बिजनौर गन्ना उत्पादन बेल्ट के लिए प्रसिद्ध है। जिले के 335952 हे0 क्षेत्रफल पर कृषि कार्य किया जाता है जिसमें जैविक कृषि 2313 हेक्टर क्षेत्रफल पर की जा रही है।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी लोककल्याण संकल्प पत्र 2022 में जैविक कृषि को विस्तार देने के लिए मिशन प्राकृतिक खेती शुरु करने की प्रतिबद्धता जताई है। सरकार की इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 2021–22 में 35 जिलों में 3870380 हेक्टेयर क्षेत्र पर जैविक कृषि कराने की योजना है। इस योजना के अन्तर्गत चयनित जिलों में जनपद बिजनौर का नाम भी शामिल है।

आंकड़ो का स्रोत

अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है प्रमुखतः जिला सांख्यिकी पुस्तिका, पुस्तक एवं आलेख, विभिन्न शोध–पत्र, जिला कृषि अधिकारी बिजनौर से आंकड़े प्राप्त किये गये हैं। विभिन्न पत्र पत्रिकायें, समाचार पत्र एवं विभिन्न वेबसाइट के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है।

जनपद बिजनौर में जैविक कृषि

केन्द्रीय सरकार की ''नमामि गंगे परियोजना'' के अन्तर्गत संचालित जैविक कृषि कार्यक्रम में गंगा नदी के प्रदूषण को रोकने के लिए गंगोत्री से लेकर पश्चिम बंगाल में गंगासागर तक गंगा के किनारे के गांवों में जैविक कृषि के लिए परियोजना शुरू की है। बिजनौर जनपद के गंगा किनारे स्थित सभी 46 गांव जैविक कृषि से जुड़े हैं। गंगा के किनारे 1234 हेक्टेयर जमीन पर 1218 किसान जैविक खेती कर रहे हैं। इन गांवों में क्रमशः सबलगढ़, तैय्यबपुर गौखा, रफीउलनगर उर्फ रावली, दयालवाला, खलीउल्लापुर, बादशाहपुर, जहानाबाद, टीप, खेड़की हेमराज, कुंदनपुर, मोहिददीनपुर, सैफपुर खादर, तैय्यबपुर काजी, कुंवरचतर भोजपुर, दारानगर, निजामतपुरा, रसूलपुर, पित्तनका, सलेमपुर मथना, बसंतपुर, सुजातपुर खादर, दत्तियाना आदि गांव है। इन गांवों के किसानों के जैविक उत्पाद या तो राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियां खरीद रही है या फिर स्थानीय स्तर पर ही महंगे बिक रहे हैं। इससे किसानों को अच्छी आमदनी हो रही है। जनपद बिजनौर गन्ना उत्पादन में प्रमुख स्थान रखता है। सरकार के एक जिला–एक उत्पाद–एक योजना के अन्तर्गत बिजनौर जनपद के गुड़ उत्पाद को चुना गया है। इसी के चलते गन्ना किसानों को जैविक कृषि अपनाने के लिए जिला प्रशासन ने जैविक गुड़ की आपूर्ति के लिए विभिन्न राज्यों से आर्डर प्राप्त कर निर्यात किया जा रहा है जिससे किसानों को अच्छी आय प्राप्त हो रही है। जनपद के बहुत जैविक कृषि करने वाले किसान सहफसली कृषि पद्धति को भी अपना रहे है। रबी सीजन में जैविक पद्धति के द्वारा गेहूं, सरसों, चना, मसूर, मटर, गन्ना व सब्जियां आदि फसलों का उत्पादन किया जायेगा।

जनपद का गांव लखपतनगर उर्फ लक्खीवाला जैविक गांव है जहां पर जैविक पद्धति से धान, गन्ना, गेहूं, सब्जियां आदि को लगभग 24 हेक्टयेर जमीन में उत्पादन किया जा रहा है। यहां पर कई समूहों में लगभग 41 से अधिक किसान जैविक कृषि कर रहे हैं। जनपद के प्रमुख अन्य गांव जहां पर जैविक कृषि की जा रही है। उनमें बाकीपुर, बसंतपुर, सियालीपुर मथना, घुड़ियापुर, जलालपुर काजी, रसूलपुर पित्तनका, निजामपुर खोड़ा, बादशाहपुर, रघुनाथपुर, खेड़की हेमराज, कुन्दनपुर, इन्दरपुर राजरूप/सिमली, नुरुल्लापुर, सैफपुर खादर, चन्द्रभानपुर किशोर उर्फ मिर्जापुर, टीप, पृथ्वीपुर/गौसपुर, सीकरी बुजुर्ग, सबलपुर , ऊमरी आदि है। यहां पर मुख्य रूप से उत्पादित फसलें गन्ना, धान, उर्द, गेहू, सरसों, मसूर और सब्जियां प्रमुख है।

तालिका 1: वर्तमान में जैविक कृषि के लिए तैयार योजना –

तहसील का नाम	कुल कृषि क्षेत्रफल (हे0 में)	कुल कृषि क्षेत्र में जैविक कृषि क्षेत्रफल(हे0 में)	प्रमुख फसलें
बिजनौर, चांदपुर, धामपुर, नगीना, नजीबाबाद	335952.00	2313.00	गन्ना, धान, उर्द, सरसो, मसूर, सब्जियां

स्रोत – जिला कृषि विभाग से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर।

जनपद की कृषि एवं जैविक कृषि के अन्तर्गत उपलब्धियां

बिजनौर जनपद में किसानो का कृषि में नवाचार के द्वारा खेती में रुझान बढ़ा है। वर्ष 2022 में जैविक कृषि के लिए 89 किसान शासन द्वारा अलग–अलग स्तरों पर सम्मानित किये जा चुके हैं। किसानों द्वारा नई फसलों का प्रयोग करने जैविक व प्राकृतिक विधि से खेती करने पर सम्मानित किया गया है। अब यहां के किसाने आयुर्वेदिक औषधिक के उत्पादन से लेकर फूल, फल, ड्रेगन फ्रूट, केला, लीची, हल्दी, सतावर, अदरक, लैमन ग्रास आदि की भी खेती कर रहे हैं।

जनपद के एक जैविक किसान को फार्मस प्रोड्यूस आर्गनाइजेशन ;थ्च्द्ध के माध्यम से 18 लाख रूपये की धनराशि प्रदेश सरकार की ओर से मिली है। भारतीय कृषि एवं खाद्य परिषद द्वारा बिजनौर जनपद की इंडिया एग्री बिजनेस अवार्ड–2022 से सम्मानित किया गया है। साथ ही नूरपुर ब्लॉक के गांव किरतपुर की रहने वाली निशा देवी को मशरूम, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया है जो कृषि क्षेत्र में जिले के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

जनपद में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए सुझाव

अधिकाधिक रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण मिट्टी की गुणवत्ता धीरे–धीरे खराब हो रही है। मिट्टी से जीवांश और ह्यूमस गायब होने लगे है जो मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं और पौधों को आवश्यक पोषक तत्व देते है। हाल ही में जनपद में एक मृदा परीक्षण से ज्ञात हुआ है कि

मिट्टी के मानव के अनुसार स्वस्थ मिट्टी में 0.8 प्रतिशत ह्यूमस या जीवाश्म होना चाहिये जो घटकर 0.2 प्रतिशत रह गया है। यह चिंता का विषय है। जैविक कृषि न केवल मिट्टी को उपजाऊ बनायेगी बल्कि लोगों व पर्यावरण को भी स्वस्थ बनायेगी। पर्यावरण की चुनौतियों का सामना करने के लिए आज जैविक कृषि सबसे बड़ी आवश्यकता है। जनपद में गंगा नदी का बड़ा क्षेत्रफल है। गंगा नदी के प्रदूषण को रोकने के लिए जैविक कृषि को करने पर जोर दिया जा रहा है। बिजनौर जनपद के गंगा किनारे के सभी 46 ग्राम जैविक कृषि से जुड़े हैं।

चुनौतियां एवं सुझाव

जलवायु परिवर्तन का कारण अधिकाधिक रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का प्रयोग है जिसके कारण ग्रीन हाउस गैसों का प्रभाव, जमीन का कठोर हो जाना, जीव–जन्तुओं को नुकसान, जल–स्तर नीचे चले जाना आदि ऐसे अनेकानेक कारण है। हम सहअस्तित्व को भूलकर स्वअस्तित्व की चिन्ता कर रहे हैं जबकि प्रकृति ने सबको जीने का अधिकार दिया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अच्छे प्रबन्धन व कौशल से कृषि की जैविक प्रणाली के घटकों की सही जानकारी के द्वारा समस्त कृषक समुदाय को जैविक कृषि की तकनीकी के बारे में विस्तार से बताये तथा उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित करें। सरकार अपनी और निजी एजेन्सियों के द्वारा इससे सम्बन्धित योजनाओं को प्रोत्साहित करे। जैविक उत्पादों का भी एक बाजार व भाव निश्चित किया जाये जिससे किसानो को इसके प्रति जागरूकता बढ़े।

जैविक कृषि क्षेत्रफल को और अधिक विस्तृत किया जा सकता है, इसके लिए कुछ सुझाव हैं–

1. किसानो को प्रशिक्षण देना एवं जैविक कृषि के लिए जागरूक करना।
2. उत्पादकता पर जोर देना।
3. जैविक खादों को आसान व सस्ती दरों पर उपलब्ध कराना।
4. जैविक उत्पादों का बाजार एवं मूल्य निर्धारित करना।
5. छोटे एवं सीमांत किसानो को अधिक से अधिक सम्मिलित करना। इससे कम क्षेत्रफल पर दैनिक उपभोग की वस्तुएं फल, सब्जी, औषधि आदि का उत्पादन किया जा सकता है।
6. जैविक कृषि से हुए फायदे को जिसमें महम्वपूर्ण पर्यावरण सुझाव, मिट्टी संरक्षण, स्वास्थ्य, सुरक्षा आदि लाभों के बारे में प्रचार–प्रसार करना एवं शोध कार्यो के लिए प्रेरित करना।

भारत में जैविक कृषि की अपार संभावनाएं है । जनपद बिजनौर में लगातार जैविक कृषि व जैविक उत्पादों को प्रशासन की ओर से बढ़ावा दिया जा रहा है लेकिन अभी भी यहां पर जैविक तरीके से खेती करने के लिए सहायता एवं शोध की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1. के.एन. सिंह– आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, ज्ञानोदय प्रकाश, गोरखपुर
2. बी.बी.सिंह – कृषि भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर
3. आर.सी.तिवारी एवं बी.एन. सिंह, कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
4. सिंह एवं दूबे– प्रादेशिक विकास नियोजन– तारा बुक एजेन्सीज, वाराणसी
5. बंसल, पी. सी. (1987), भारत की कृषि समस्याओं का अध्ययन, नई दिल्ली
6. हुसैन, एम. (2002) व्यवस्थित कृषि भूगोल,,
7. IJCRT (International Journal of Creative Research Thoughts) (2020) बिजनौर जनपद में कृषि भूमि उपयोग का विश्लेषण तथा आर्थिक विकास पर प्रभाव का मूल्यांकन– डॉ0 देवेन्द्र कौर एवं विकास कुमार, वोल्यूम 9, अंक 5, मई